



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि न्यूज	11-11-23	11	2-6

हकृवि में आयुर्वेद दिवस के उपलक्ष्य पर कार्यक्रम का आयोजन आयुर्वेद अपनाने से मिल सकता है बीमारियों से छुटकारा: प्रो. काम्बोज

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयुर्वेद दिवस के उपलक्ष्य पर कार्यक्रम का आयोजन
हरिन्यूज न्यूज | हिंसार



हिंसार। प्रगतिशील किसान को सम्मानित करते मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज।

आयुर्वेद न केवल एक चिकित्सा पद्धति है बल्कि जीवन को सही ढंग से जीने का संपूर्ण ज्ञान है। स्वस्थ शरीर के बिना हम जीवन में कुछ नहीं कर सकते हैं। इसलिए बेहतर है कि हम अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए दिनचर्या व खानपान में आवश्यक बदलाव करें। यह बात हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कही। वे विश्वविद्यालय के औषधीय संग्रहित एवं क्षमतावान अनुभाग द्वारा मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय में आयुर्वेद दिवस के उपलक्ष्य पर आयोजित कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। इस दौरान मुख्य वक्ता के रूप में नागरिक अस्पताल के आयुष विभाग के चिकित्सक डॉ. सुखबीर वर्मा भी उपस्थित रहे। मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने अपने संबोधन में सभी को दैनिक जीवन में आयुर्वेद के सिद्धांतों को अपनाने के

हमारी रसोईघर एक प्रकार की चिकित्सापत्र

मुख्य वक्ता डॉ. सुखबीर वर्मा ने आयुर्वेद विषय, उसके मूल सिद्धांतों व प्राथमिकताओं को सही ढंग से जांचकर उसे जीवन में अपनाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि हमारी रसोईघर एक प्रकार की चिकित्सापत्र है, जहाँ सस्ते व आसानी से हमें उन सामग्रियों का प्राप्त हो जाती है, जो हमारे जीवन और स्वस्थ दोनों को प्रभावित करती हैं। मुख्य वक्ता ने कोरोनाकाल में आयुर्वेद को अलग पद्धति बताकर उससे हमें घाले फायदे भी दिखाए।

साथ-साथ दिनचर्या व खानपान में बदलाव करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि अपने संपूर्ण जीवन को सही तरीके से जीने व उसे खुशहाल बनाने के लिए जिस ज्ञान की जरूरत होती है वह आयुर्वेद बताती है।

कृषि औषधीय फसलों से कराया रूबरू

कार्यक्रम के दौरान कैपस स्कूल की छात्रा रिद्धि व राधिका ने आयुर्वेद विषय में तुलसी, नीम, अशुगंधा, एलोविरा, लहसुन, अदरक, सतावर, मुलहठी, गिलोय सहित अन्य कृषि औषधीय फसलों के बारे में व इनसे होने वाले फायदों से सभी को रूबरू करवाया। साथ ही विश्वविद्यालय के औषधीय संग्रहित एवं क्षमतावान अनुभाग के सहायक वैज्ञानिक डॉ. राजेश आर्य ने रोचक तरीके से कविता के

प्रगतिशील किसानों को किया सम्मानित

विश्वविद्यालय के परीक्षा नियंत्रक, नू-दूश्य संरचना इकाई के अध्यक्ष एवं कार्यक्रम के आयोजक सचिव डॉ. पवन कुमार ने बताया कि मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कृषि क्षेत्र में औषधीय पौधों को उगाते व इसके प्रचार-प्रसार में अलग-अलग अथवा करने वाले प्रगतिशील किसान व वैद्य जिनमें रघुबीर, बलदेव शर्मा व छोटाराम सहित विश्वविद्यालय के नू-दूश्य संरचना इकाई के कर्मचारी रामपाल, हर्षनवाटिका से इनका प्रसाद को सम्मानित किया। साथ ही बायोटेक्नोलॉजी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. सुधीर शर्मा, डॉ. प्रभाज डॉ. अशोक मोहंदास व गैर-शिक्षक कर्मचारी युक्तिव के प्रधान दिनेश राठ को स्मृति चिह्न दिया।

माध्यम से आयुर्वेद की खूबियों की सुंदर ढंग से प्रस्तुति दी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पजाब कसरी	11-11-23	2	4-1

आयुर्वेद अपनाने व संतुलित आहार का सेवन करने से मिल सकता है बीमारियों से छुटकारा : प्रो. काम्बोज

हिसार, 10 नवंबर (ब्यूरो) : आयुर्वेद न केवल एक चिकित्सा पद्धति है बल्कि जीवन को सही ढंग से जीने का संपूर्ण ज्ञान है। स्वस्थ शरीर के बिना हम जीवन में कुछ नहीं कर सकते हैं। इसलिए बेहतर है कि हम अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए दिनचर्या व खानपान में आवश्यक बदलाव करें। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय के औषधीय सुगंधित एवं क्षमतावान अनुभाग द्वारा मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय में आयुर्वेद दिवस के उपलक्ष्य पर आयोजित कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। इस दौरान मुख्य वक्ता के रूप में नागरिक अस्पताल के आयुष विभाग के चिकित्सक डॉ. सुखबीर वर्मा भी उपस्थित रहे। मुख्यातिथि प्रो. बी.आर.

काम्बोज ने अपने संबोधन में सभी को दैनिक जीवन में आयुर्वेद के सिद्धांतों को अपनाने के साथ-साथ दिनचर्या व खानपान में बदलाव करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद की उत्पत्ति संस्कृत भाषा से हुई है, जोकि आयु+वेद से मिलकर बना है। आयु का मतलब लंबी आयु व वेद का मतलब विज्ञान है।

अर्थात् आयुर्वेद का शाब्दिक अर्थ जीवन का विज्ञान है। उन्होंने कहा कि अपने संपूर्ण जीवन को सही तरीके से जीने व उसे खुशहाल बनाने के लिए जिस ज्ञान की जरूरत होती है वह आयुर्वेद बताती है। उन्होंने आधुनिक युग में व्यक्ति की बिगड़ती दिनचर्या व असंतुलित आहार को मुख्य कारण बताकर चिंता भी व्यक्त की।

उन्होंने कहा कि आयुर्वेद हमें बीमारी होने की मूलभूत कारणों को बताने के साथ-साथ समय

रूप से उसको जड़ से खत्म करता है। उन्होंने आयुर्वेद विषय के प्रति जागरूक करने के लिए पठन-पाठन की सामग्री में इसे शामिल करने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि स्कूल, कॉलेज व विश्वविद्यालय स्तर पर पाठ्यक्रमों में आयुर्वेद विषय पर विस्तारपूर्वक अध्याय शामिल करने चाहिए ताकि वर्तमान व भविष्य की पीढ़ियों को रोगमुक्त करने व उन्हें जिंदगी जीने की सही कला से अवगत कराने के लिए आयुर्वेद विषय के उद्देश्यों को तर्कपूर्ण तरीके से समझा जा सके। उन्होंने विश्वविद्यालय के औषधीय सुगंधित एवं क्षमतावान अनुभाग द्वारा इजाद किए गए उन्नत औषधीय पौधों का जिक्र करते हुए संबंधित वैज्ञानिकों को सराहा। साथ ही भविष्य में भी इसी प्रकार शोध करने के लिए प्रेरित किया।

मुख्य वक्ता डॉ. सुखबीर वर्मा ने आयुर्वेद विषय, उसके मूल

सिद्धांतों व प्राथमिकताओं को सही ढंग से जानकर उसे जीवन में अपनाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि करीब 5 हजार वर्ष पूर्व आयुर्वेद को चरक संहिता, सुश्रुत संहिता व अष्टांग हृदय नामक ग्रंथ में अलग-अलग तरीके से परिभाषित किया, जिसमें पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि एवं आकाश तत्वों का व्यक्ति पर प्रभाव डालने को अहम विषय बताया।

मुख्य वक्ता ने कहा कि आयुर्वेद में मुख्यत वात दोष, पित्त दोष व कफ दोष होते हैं, जोकि व्यक्ति की शारीरिक संरचना पर आधारित न होकर उसकी शारीरिक प्रवृत्तियों जिनमें भोजन का चुनाव व पाचन पर आधारित होते हैं। उन्होंने कहा कि हमारी रसोईघर एक प्रकार की चिकित्साप्रत है, जहां सस्ते व आसानी से हमें उन सामग्रियों की प्राप्त हो जाती है, जो हमारे जीवन और स्वस्थ दोनों को प्रभावित करती है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	11-11-23	2	3-4

कार्यक्रम • हरियाणा कृषि विवि में आयुर्वेद दिवस मनाया

आयुर्वेद न सिर्फ चिकित्सा पद्धति बल्कि जीने का संपूर्ण ज्ञान : वीसी

भास्कर न्यूज़ | हिंसर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि आयुर्वेद न केवल एक चिकित्सा पद्धति है बल्कि जीवन को सही ढंग से जीने का संपूर्ण ज्ञान है। स्वस्थ शरीर के बिना हम जीवन में कुछ नहीं कर सकते हैं। इसलिए बेहतर है कि हम अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए दिनचर्या व खानपान में बदलाव करें। वे विवि के औषधीय सुगंधित एवं क्षमतावान अनुभाग द्वारा मौलिक विज्ञान एवं मानविकी कॉलेज में आयुर्वेद दिवस के उपलक्ष्य पर कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे।



मुख्य वक्ता ने आयुर्वेद पद्धति के फायदे गिनाए

मुख्य वक्ता डॉ. सुखबीर वर्मा ने कहा कि आयुर्वेद में मुख्यतः वात दोष, पित्त दोष व कफ दोष होते हैं। जो व्यक्ति की शारीरिक संरचना पर आधारित न होकर उसकी शारीरिक प्रवृत्तियों जिनमें भोजन का चुनाव व पाचन पर आधारित होते हैं। हमारे रसोईघर में सस्ते व आसानी से हमें उन सामग्रियों की प्राप्त हो जाती है, जो हमारे जीवन और स्वास्थ्य दोनों को प्रभावित करती है। मुख्य वक्ता ने कोरोनाकाल में आयुर्वेद को अहम पद्धति बताकर उससे होने वाले फायदे भी गिनाए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दिनांक जागरण	11-11-23	4	6-8

आयुर्वेद जीवन सही से जीने का संपूर्ण ज्ञान : कुलपति

जागरण संवाददाता, हिसार : आयुर्वेद न केवल एक चिकित्सा पद्धति है बल्कि जीवन को सही ढंग से जीने का संपूर्ण ज्ञान है। स्वस्थ शरीर के बिना हम जीवन में कुछ नहीं कर सकते हैं। इसलिए बेहतर है कि हम अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए दिनचर्या व खानपान में आवश्यक बदलाव करें। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय के औषधीय सुगंधित एवं क्षमतावान अनुभाग द्वारा मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय में आयुर्वेद दिवस के उपलक्ष्य पर आयोजित कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। मुख्य वक्ता के रूप में नागरिक अस्पताल के आयुष विभाग के चिकित्सक डा. सुखबीर वर्मा भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान



मुख्यातिथि प्रो. बीआर काम्बोज प्रगतिशील किसान को सम्मानित करते हुए।

कैंपस स्कूल की छात्रा रिद्धि व राधिका ने आयुर्वेद विषय में तुलसी, नीम, अश्वगंधा, एलोविरा, लहसुन, अदरक, सतावर, मुलहट्टी, गिलोय सहित अन्य कृषि औषधीय फसलों के बारे में व इनसे होने वाले फायदों से सभी को रूबरू करवाया। इस

अवसर पर सहायक वैज्ञानिक डा. राजेश आर्य, सचिव डा. पवन कुमार, रघुबीर, बलदेव शर्मा, डा. सुधीर शर्मा, हौटा प्रधान डा. अशोक गोदारा, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. एसके पाहुजा, छात्रा श्वेता आदि मौजूद थे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समर उजाला	11.11.23	4	8

आयोजन

दिनचर्या और खानपान में आवश्यक बदलाव करें : प्रो. बीआर काम्बोज

आयुर्वेद अपनाने और संतुलित आहार खाने से मिलेगा बीमारियों से छुटकारा

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। आयुर्वेद न केवल एक चिकित्सा पद्धति है बल्कि जीवन को सही ढंग से जीने का संपूर्ण ज्ञान है। स्वस्थ शरीर के बिना हम जीवन में कुछ नहीं कर सकते हैं। इसलिए बेहतर है कि हम अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए दिनचर्या व खानपान में आवश्यक बदलाव करें। आयुर्वेद अपनाने और संतुलित आहार का सेवन करने से बीमारियों से छुटकारा मिलता है।

यह बात हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कही। वह विश्वविद्यालय के मौलिक

विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय में आयुर्वेद दिवस के उपलक्ष्य पर आयोजित कार्यक्रम में वतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि आयुर्वेद हमें बीमारी होने की मूलभूत कारणों को बताने के साथ-साथ समग्र रूप से उसको जड़ से खत्म करता है। कुलपति ने कहा कि स्कूल, कॉलेज व विश्वविद्यालय स्तर पर पाठ्यक्रमों में आयुर्वेद विषय पर विस्तारपूर्वक अध्याय शामिल करने चाहिए ताकि वर्तमान व भविष्य की पीढ़ियों को रोगमुक्त करने व उन्हें जिंदगी जीने की सही कला से अवगत कराने के लिए आयुर्वेद विषय के उद्देश्यों को



हिसार में आयुर्वेद दिवस के उपलक्ष्य पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज। शीत: संस्थान

तर्कपूर्ण तरीके से समझा जा सकें। मुख्य वक्ता डॉ. सुखबीर वर्मा ने कहा कि हमारी रसोईघर एक प्रकार की चिकित्सालय है,

जहां सस्ते व आसानी से हमें उन सामग्रियों की प्राप्ति हो जाती है, जो हमारे जीवन और स्वस्थ दोनों को प्रभावित

करती है। कैपस स्कूल की छात्रा रिद्धि व राधिका ने औषधीय फसलों से वाले फायदों से सभी को रूबरू करवाया।

कार्यक्रम में औषधीय पौधों को उगाने व इसके प्रचार-प्रसार में अहम भूमिका निभाने वाले प्रगतिशील किसान रघुबीर, बलदेव शर्मा व छोटाराम सहित विश्वविद्यालय के भू-दृश्य संरचना इकाई के कर्मचारी रामपाल, हर्बल वाटिका से द्वारका प्रसाद को सम्मानित किया।

इस अवसर पर डॉ. राजेश आर्य, डॉ. पवन कुमार, डॉ. सुधीर शर्मा, होटा प्रधान डॉ. अशोक गोदारा व गैर-शिक्षक कर्मचारी युनियन के प्रधान दिनेश राड़ आदि मौजूद रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	10.11.2023	--	--

आयुर्वेद अपनाने व संतुलित आहार का सेवन करने से मिल सकता है बीमारियों से छुटकारा : प्रो. काम्बोज



पांच बजे न्यूज

हिसार। आयुर्वेद न केवल एक चिकित्सा पद्धति है बल्कि जीवन को सही ढंग से जीने का संपूर्ण ज्ञान है। स्वस्थ शरीर के बिना हम जीवन में कुछ नहीं कर सकते हैं। इसलिए, बेहतर है कि हम अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए दिनचर्या व खानपान में आवश्यक बदलाव करें। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. वी.आर. काम्बोज ने कहे। ये विश्वविद्यालय के औषधीय सुगंधित एवं क्षमतावान अनुभाग द्वारा भौतिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय में आयुर्वेद दिवस के उपलक्ष्य पर आयोजित कार्यक्रम में वरीय मुख्यअतिथि संबोधित कर रहे थे। इस दौरान मुख्य बक्ता के रूप में नागरिक अस्पताल के आयुष विभाग के चिकित्सक डॉ. सुखवीर शर्मा भी उपस्थित रहे।

मुख्यअतिथि प्रो. वी.आर. काम्बोज ने अपने संबोधन में सभी को दैनिक जीवन में आयुर्वेद के सिद्धांतों को अपनाने के साथ-साथ दिनचर्या व खानपान में बदलाव करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद की उत्पत्ति संस्कृत भाषा से हुई है, जोकि आयुर्वेद से मिलकर बना है। आयु का मतलब लंबी आयु व केर का मतलब विज्ञान है। अर्थात् आयुर्वेद का शाब्दिक अर्थ जीवन का विज्ञान है। उन्होंने कहा कि अपने संपूर्ण जीवन को सही तरीके से जीने व उसे खुशहाल बनाने के लिए जिस ज्ञान की जरूरत होती है वह आयुर्वेद बताती है। उन्होंने आयुर्वेद युग में व्यक्ति की विभिन्न दिनचर्या व

असंतुलित आहार को मुख्य कारण बताकर चिंता भी व्यक्त की। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद हमें खोपटी होने की मूलभूत कारणों को खतरे के साथ-साथ समग्र रूप से उसकी जड़ से खत्म करता है। उन्होंने आयुर्वेद विषय के प्रति जागरूक करने के लिए पठन-पाठन की स्वयंसेवा में इसे शामिल करने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि स्कुल, कॉलेज व विश्वविद्यालय स्तर पर पाठ्यक्रमों में आयुर्वेद विषय पर विस्तारपूर्वक अध्याय शामिल करने चाहिए ताकि वर्तमान व भविष्य की पीढ़ियों को रोमांचित करने व उन्हें जिंदगी जीने की सही कला से अवगत करने के लिए आयुर्वेद विषय को उद्देश्यों को लक्ष्यपूर्ण तरीके से समझा जा सके। उन्होंने विश्वविद्यालय के औषधीय सुगंधित एवं क्षमतावान अनुभाग द्वारा इजाजत किए गए उन्नत औषधीय पौधों का जिक्र करते हुए संबंधित वैज्ञानिकों को सराहना करते हुए भविष्य में भी इसी प्रकार शोध करने के लिए प्रेरित किया।

मुख्य बक्ता डॉ. सुखवीर शर्मा ने आयुर्वेद विषय, उसके मूल सिद्धांतों व प्रथमिकताओं को सही ढंग से जानकर उसे जीवन में अपनाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि करीब 5 हजार वर्ष पूर्व आयुर्वेद को चरक संहिता, सुश्रुत संहिता व अष्टांग ह्यय नामक ग्रंथ में अलग-अलग तरीके से परिभाषित किया, जिसमें पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि एवं आकाश तत्वों का व्यक्ति पर प्रभाव डालने को अहम विषय बताया। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद में मुख्यतः खात दोष, पित्त दोष व कफ दोष होते हैं, जोकि व्यक्ति की सार्वत्रिक

संरचना पर आधारित न होकर उसकी शारीरिक प्रकृतियों जिनमें भोजन का चुनाव व पाचन पर आधारित होते हैं। उन्होंने कहा कि हमारी रसोईभर एक प्रकार की चिकित्साप्रति है, जहां सस्ते व आसानी से हमें उन सामग्रियों की प्राप्त हो जाती है, जो हमारे जीवन और स्वस्थ दोनों को प्रभावित करती है। मुख्य बक्ता ने कोरोनाकाल में आयुर्वेद को अहम पद्धति बताकर उससे होने वाले फायदे भी गिनाए। उन्होंने आयुर्वेद को भारतीय आयुर्विज्ञान की संज्ञा देते हुए कहा कि यह एक ऐसी विधा है, जिसमें हम शरीर को स्वस्थ रखने के साथ-साथ जीवन को सही तरीके से जीने की शैली को भी सीखते हैं। उन्होंने आयुर्वेद के विभिन्न प्रारूपों जिनमें कल्प चिकित्सा व पंचकर्म विषय के बारे में भी विस्तारपूर्वक जानकारी दी।

कार्यक्रम के दौरान कैंपस स्कूल की छात्रा रिद्धि व यशिका ने आयुर्वेद विषय में तुलसी, नीम, अश्वगंधा, एलोबिरा, लहसुन, अदरक, संतावर, गुणहट्टी, गिलोय सहित अन्य कृषि औषधीय फसलों के बारे में व इनसे होने वाले फायदों से सभी को रुचक करवाया। विश्वविद्यालय के परीक्षा नियंत्रक, भू-दूरय संरचना इकाई के अध्यक्ष एवं कार्यक्रम के अध्येक्षक सचिव डॉ. पवन कुमार ने बताया कि मुख्यअतिथि प्रो. वी.आर. काम्बोज ने कृषि क्षेत्र में औषधीय पौधों को उपाने व इसके प्रचार-प्रसार में अहम भूमिका अदा करने वाले प्रतिष्ठित किसान व वैद्य जिनमें रघुवीर, बलदेव शर्मा व उद्योग सहित विश्वविद्यालय के भू-दूरय संरचना इकाई के कार्यकारी रामपाल, हर्षलखाटिका से द्वाराका प्रसाद को सम्मानित किया।

साथ ही वायोटेक्नोलॉजी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. सुवीर शर्मा, होटा प्रबलन डॉ. अशोक मोदार व गैर-शिक्षक कार्यकारी सुनिषन के प्रबलन दिनेश राड़ को स्मृति चिह्न दिया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	10.11.2023	--	--

आयुर्वेद अपनाने व संतुलित आहार का सेवन करने से मिल सकता है बीमारियों से मुटकारा : प्रो. बी.आर. काम्बोज

सिटीपल्स न्यूज, हिसार। आयुर्वेद न केवल एक चिकित्सा पद्धति है बल्कि जीवन को सही ढंग से जीने का संपूर्ण ज्ञान है। स्वस्थ शरीर के बिना हम जीवन में कुछ नहीं कर सकते हैं। इसलिए बेहतर है कि हम अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए दिनचर्या व खानपान में आवश्यक बदलाव करें। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहे। ये विश्वविद्यालय के औषधीय सुगंधित एवं क्षमतावान अनुभाग द्वारा मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय में आयुर्वेद दिवस के उपलक्ष्य पर आयोजित कार्यक्रम में बतौर मुख्यअतिथि संबोधित कर रहे थे। इस दौरान मुख्य वक्ता के रूप में नागरिक अस्पताल के आयुष विभाग के चिकित्सक डॉ. सुखबीर वर्मा भी उपस्थित रहे। मुख्यअतिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने अपने संबोधन में सभी को दैनिक जीवन में आयुर्वेद के सिद्धांतों को अपनाने के साथ-साथ दिनचर्या व खानपान में बदलाव करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद की उत्पत्ति संस्कृत भाषा से हुई है, जोकि आयु+वेद से मिलकर बना है। आयु का मतलब लंबी आयु व वेद का मतलब विज्ञान है। अर्थात् आयुर्वेद का शाब्दिक अर्थ जीवन का विज्ञान है। उन्होंने कहा कि अपने संपूर्ण जीवन को सही तरीके से जीने व उसे खुशहाल बनाने के लिए जिस ज्ञान की जरूरत होती है वह आयुर्वेद बताती है। उन्होंने आधुनिक युग में व्यक्ति की बिगड़ी दिनचर्या व असंतुलित आहार को मुख्य कारण बताकर चिंता भी व्यक्त की।

उन्होंने कहा कि आयुर्वेद हमें बीमारी होने की मूलभूत कारणों को बताने के साथ-साथ समग्र रूप से उसको जड़ से खत्म करता है। उन्होंने आयुर्वेद विषय के प्रति जागरूक करने के लिए पठन-पाठन की सामग्री में इसे शामिल करने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि स्कूल, कॉलेज व विश्वविद्यालय स्तर पर पाठ्यक्रमों में आयुर्वेद विषय पर विस्तारपूर्वक अध्याय शामिल करने चाहिए ताकि वर्तमान व भविष्य की पीढ़ियों को रोगमुक्त करने व उन्हें जिंदगी जीने की सही कला से अवगत कराने के लिए आयुर्वेद विषय के उद्देश्यों को तर्कपूर्ण तरीके से समझा जा सकें। उन्होंने विश्वविद्यालय के औषधीय सुगंधित एवं क्षमतावान अनुभाग द्वारा इजाद किए गए उन्नत औषधीय पौधों का जिक्र करते हुए संबधित वैज्ञानिकों को सराहा। साथ ही भविष्य में भी इसी प्रकार शोध करने के लिए प्रेरित किया। मुख्य वक्ता डॉ. सुखबीर वर्मा ने आयुर्वेद विषय, उसके मूल सिद्धांतों व प्राथमिकताओं को सही ढंग से जानकर उसे जीवन में अपनाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि करीब 5 हजार वर्ष पूर्व आयुर्वेद को चरक संहिता, सुश्रुत संहिता व अहम हृदय नामक ग्रंथ में अलग-अलग तरीके से परिभाषित किया, जिसमें पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि एवं आकाश तत्वों का व्यक्ति पर प्रभाव डालने को अहम विषय बताया। मुख्य वक्ता ने कहा कि आयुर्वेद में मुख्यतः वात दोष, पित्त दोष व कफ दोष होते हैं, जोकि व्यक्ति की शारीरिक संरचना पर आधारित न होकर उसकी शारीरिक प्रवृत्तियों जिनमें भोजन का चूनाव व पाचन पर आधारित होते हैं। उन्होंने कहा कि हमारी रसोईघर एक प्रकार की चिकित्साग्रह है, जहां गरमी व आसानी से हमें उन सामग्रियों की प्राप्त हो जाती है, जो हमारे जीवन और स्वस्थ दोनों को प्रभावित करती हैं। मुख्य वक्ता ने कोरोनाकाल में आयुर्वेद की अहम पद्धति बताकर उससे होने वाले फायदे भी गिनाए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	10.11.2023	--	--

आयुर्वेद अपनाने व संतुलित आहार का सेवन करने से मिल सकता है बीमारियों से छुटकारा : प्रो. काम्बोज

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। आयुर्वेद न केवल एक चिकित्सा पद्धति है बल्कि जीवन को सही ढंग से जीने का संपूर्ण ज्ञान है। स्वस्थ शरीर के बिना हम जीवन में कुछ नहीं कर सकते हैं। इसलिए बेहतर है कि हम अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए दिनचर्या व खानपान में आवश्यक बदलाव करें। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय के औषधीय सुसंरचित एवं क्षमतावान अनुभाग द्वारा सौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय में आयुर्वेद दिवस के उपलक्ष्य पर आयोजित कार्यक्रम में चर्चा मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। इस दौरान मुख्य वक्ता के रूप में नागरिक अस्पताल के आयुष विभाग के चिकित्सक डॉ. सुखवीर वर्मा भी उपस्थित रहे। मुख्यातिथि प्रे. बी.आर. काम्बोज ने अपने संबोधन में सभी को दैनिक जीवन में आयुर्वेद के सिद्धांतों को अपनाने के साथ-साथ दिनचर्या व खानपान में बदलाव करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद को उर्ध्वत संस्कृत भाषा से हुई है जोकि आयु-वेद से मिलकर बना है। आयु का मतलब लंबी आयु व वेद का मतलब विज्ञान है। अर्थात् आयुर्वेद का शाब्दिक अर्थ जीवन का विज्ञान है। उन्होंने कहा कि अपने संपूर्ण जीवन को सही तरीके से जीने व उसे खुशहाल बनाने के लिए जिस ज्ञान की जरूरत होती है वह आयुर्वेद बताता है। उन्होंने आधुनिक युग में व्यक्ति को बिगड़ती दिनचर्या व असंतुलित आहार को मुख्य कारण बताकर चिंता भी व्यक्त की। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद हमें बीमारी होने की मूलभूत कारणों को बताने के साथ-साथ समग्र रूप से उसको जड़ से खत्म करता है। उन्होंने आयुर्वेद विषय के प्रति जागरूक करने के लिए पढ़न-पाठन की सामग्री में इसे शामिल करने पर जोर दिया। उन्होंने विश्वविद्यालय के औषधीय सुसंरचित एवं क्षमतावान अनुभाग द्वारा इजाद किए गए उन्नत औषधीय पौधों का जिक्र करते हुए संबोधित वैज्ञानिकों को सराहा। साथ ही भविष्य में भी इसी प्रकार शोध करने के लिए प्रेरित किया। मुख्य वक्ता डॉ. सुखवीर वर्मा ने आयुर्वेद विषय, उसके मूल सिद्धांतों व प्राथमिकताओं को सही ढंग से जानकर उसे जीवन में अपनाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि करीब 5 हजार वर्ष पूर्व आयुर्वेद को चक्र सँहता, स्मरुत सँहता व अष्टांग हृदय नामक ग्रंथ में अलग-अलग तरीके से परिभाषित किया, जिसमें पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि एवं आकाश तत्वों का व्यक्ति पर प्रभाव डालने को अहम विषय बताया। उन्होंने कहा कि हमारी रसोईवाले एक प्रकार की चिकित्साप्रत है जहाँ सस्ते व आसानी से हमें उन सामग्रियों की प्राप्त हो जाती है, जो हमारे जीवन और स्वस्थ दोनों को प्रभावित करती है। मुख्य वक्ता ने कोरोनाकाल में आयुर्वेद की अहम पद्धति बताकर उससे होने वाले फायदे भी गिनाए। उन्होंने आयुर्वेद को भारतीय आयुर्विज्ञान की संज्ञा देते हुए कहा कि यह एक ऐसी विधा है जिसमें हम शरीर को स्वस्थ रखने के साथ-साथ जीवन को सही तरीके से जीने की सैली को भी सीखते हैं। उन्होंने आयुर्वेद के विभिन्न प्रकारों जिनमें कल्प चिकित्सा व पंचकर्म विषय के बारे में भी विस्तारपूर्वक जानकारी दी। कार्यक्रम के दौरान कैप्टन स्क्वून की छात्रा रिद्धि व राधिका ने आयुर्वेद विषय में तुलसी, नीम, अशुगंधा, एलोचिरा, लहसुन, अदरक, सलाख, मूलहठी, गिलोय सहित अन्य कृषि औषधीय फसलों के बारे में व इनसे होने वाले फायदों से सभी को रुबरू करवाया। साथ ही विश्वविद्यालय के औषधीय सुसंरचित एवं क्षमतावान अनुभाग के सहायक वैज्ञानिक डॉ. गजेश आर्ष ने रोचक तरीके से कविता के माध्यम से आयुर्वेद की खूबियों की सुंदर ढंग से प्रस्तुति दी। विश्वविद्यालय के परीक्षा नियंत्रक, भू-दूर्य संरचना इकाई के अध्यक्ष एवं कार्यक्रम के आयोजक सचिव डॉ. पवन कुमार ने बताया कि मुख्यातिथि प्रे. बी.आर. काम्बोज ने कृषि क्षेत्र में औषधीय पौधों को उगाने व इसके प्रचार-प्रसार में अहम भूमिका अदा करने वाले प्रातिशील कितान व वेंक कितानें सुखीर, बलदेव शर्मा व छोटाराम सहित विश्वविद्यालय के भू-दूर्य संरचना इकाई के कर्मचारी रामपाल, हर्बलवाटिका से द्वारका प्रसाद को सम्मानित किया। साथ ही बायोटेक्नोलॉजी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. सुधीर शर्मा, होटा प्रधान डॉ. अशोक गोदारा व गैर-शिक्षक कर्मचारी धूमनियन के प्रधान विनेश राठो को स्मृति चिन्ह दिया। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. परसेक पाहुजा ने सभी का स्वागत किया, जबकि डॉ. पवन कुमार ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। साथ ही मंच संचालन छात्रा श्वेता ने किया।

